साथी हाथ बढ़ाना

प्रश्न 1.इस गीत की किन पंक्तियों को तुम आप अपने आसपास की जिंदगी में घटते हुए देख सकते हो?

उत्तर-इस गीत की निम्नलिखित पंक्तियों को हम अपने आसपास की जिंदगी में घटते हुए देख सकते हैं-

साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।
साथी हाथ बढ़ाना।
हम मेहनतवालों ने जब भी मिलकर कदम बढ़ाया।
सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया,
फ़ौलादी हैं सीने अपने, फ़ौलादी हैं बाँहें।
हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें।

प्रश्न 2.'सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया'-साहिर ने ऐसा क्यों कहा है? लिखो।

उत्तर-साहिर ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि एक साथ मिलकर काम करने से बड़ी से बड़ी बाधाओं में भी रास्ता निकल आता है, यानी काम आसान हो जाता है। साहसी व्यक्ति सभी

www.kcph.com

बाधाओं पर आसानी से विजय पा लेता है क्योंकि एकता और संगठन में शक्ति होती है जिसके बल पर वह पर्वत और सागर को भी पार कर ले

प्रश्न 3.गीत में सीने और बाँहों को फ़ौलादी क्यों कहा गया है?
उत्तर-सीने और बाँह को फ़ौलादी इसलिए कहा गया है क्योंकि हमारे इरादे मजबूत हैं। हमारे बाजुओं में आपार शक्ति है। हम ताकतवर हैं। हम बलवान हैं। हमारी बाँहें फ़ौलादी इसलिए भी हैं कि इसमें असीम कार्य क्षमता का पता चलता है। हमारी बाजुएँ काफ़ी शक्तिशाली भी हैं।

भाषा की बात

प्रश्न 1.हाथ और हस्त एक ही शब्द के दो रूप हैं। नीचे दिए गए शब्दों में हस्त और हाथ छिपे हैं। शब्दों को पढ़कर बताओ कि हाथों का इनमें क्या काम है-हाथघड़ी, हथौड़ा, हस्तशिल्प, हस्तक्षेप, निहत्था, हथकंडा, हस्ताक्षर, हथकरघा

- ***उत्तर-***
    - **हाथघड़ी-** हाथघड़ी हाथ की कलाई पर पहनी जाती है।
    - **हथौड़ा-** एक ऐसा लोहे का औज़ार है जिसे हाथ से पकड़कर चलाया जाता है।
    - **हस्तशिल्प-** इस शिल्पकारी को हाथ (हस्त) से किया जाता है।
    - **हस्तक्षेप-** बीच-बचाव करने के लिए। इसका अर्थ है दखल देना।
    - **निहत्था-** जिसके हाथ में कोई हथियार न हो, उसे निहत्था कहते हैं।
    - **हथकंडा-** किसी कार्य को पूरा करने के लिए अनुचित तरीका अपनाने को हथकंडा कहते हैं। इसमें भी हाथ का कार्य नहीं है।
    - **हस्ताक्षर-** हाथ से अपना नाम लिखकर किसी कार्य हेतु स्वीकृति देना।
    - **हथकरघा-** हाथ से किए जाने वाले छोटे-मोटे उद्योग धंधे, जैसे चरखा चलाना, कपड़ा बुनना, टोकरी बुनना आदि।

प्रश्न 2.इस गीत में परबत, सीस, रस्ता, इंसाँ शब्दों के प्रयोग हुए हैं। इन शब्दों के प्रचलित रूप लिखो।

- **उत्तर**-
    - परबत – पहाड़, पर्वत
    - सीस – शीश, सिर, माथा
    - रस्ता – रास्ता
    - इंसाँ – इंसान, मनुष्य

www.kcph.com

प्रश्न 3.“कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना”-

इस वाक्य को गीतकार इस प्रकार कहना चाहता है

(तुमने) कल गैरों की खातिर (मेहनत) की, आज (तुम) अपनी खातिर करना।

इस वाक्य में ‘तुम’ कर्ता है जो गीत की पंक्ति में छंद बनाए रखने के लिए हटा दिया गया है। उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द ‘अपनी’ का प्रयोग कर्ता ‘तुम’ के लिए हो रहा है, इसलिए यह सर्वनाम है। ऐसे सर्वनाम जो अपने आप के बारे में बताएँ निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। (निज का अर्थ ‘अपना’ होता है।)

निजवाचक सर्वनाम के तीन प्रकार होते हैं जो नीचे दिए वाक्यों में रेखांकित हैं-

मैं अपने आप (या आप) घर चली जाऊँगी।

मोहन अपना काम खुद करता है।

माला ने अपने लिए कुछ नहीं खरीदा।

अब तुम भी निजवाचक सर्वनाम के निम्नलिखित रूपों का वाक्यों में प्रयोग करो-

अपने को, अपने से, अपना, अपने पर, अपने लिए, आपस में

- उत्तर-
    - **अपने को-** हमें अपने को दुश्मन से बचाना है।
    - **अपने पर-** मुझे अपने पर भरोसा है।
    - **अपने से-** अपने से बड़े व्यक्तियों की बात मानना चाहिए।
    - **अपने लिए-** हमें अपने लिए कुछ वक्त निकलना चाहिए।
    - **अपना-** आप इसे अपना ही समझिए।
    - **आपस में-** आपस में झगड़े मत करो।

www.kcph.com